

आज की मुरली सार --

बाबा ने कहा, बच्चों को डेड साइलेन्स में रहने की प्रैक्टिस करनी है.

हम कैसे डेड साइलेन्स में रहने की प्रैक्टिस करें?

आत्मा की डेड साइलेन्स अवस्था माना संपूर्ण बिजरूप अवस्था. इस अवस्था में आत्मा को शरीर का भान नहीं रहता, आत्मा संपूर्ण कर्मेन्द्रिया जीत बन, अपने घर, परमधाम में बाबा के लव में लवलीन बन जाती है.

परमधाम, वह स्थान है जो, समय, संकल्प और साउंड से परे है. परमधाम, हम आत्माओं का धर है, जो इस पांच तत्वों से ऊपर है. परमधाम, शांत और पवित्र स्थान है, जहां हमारे प्यारे शिवबाबा रहते हैं.

आत्मा को बिजरूप अवस्था का अनुभव करने के लिए, अमृतवेले के समय, एकान्त में बैठना है. फिर एकाग्रता की शक्ति को युज कर, स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित करना है. आत्मिक स्थिति बनाने के लिए नीचे दिये हुवे स्वमानो को सिमर कर, दिव्यबुद्धि का युज कर स्वयं को वह स्वरूप में स्थित करना है.

में बुकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं. मैं आत्मा हूं.

मैं आत्मा, इस शरीर की मालिक हूं.

मैं आत्मा, सूक्ष्म कर्मेन्द्रिया, मन-बुद्धि-संस्कार की मालिक हूं.

मैं शांत स्वरूप आत्मा हूं, शांति सागर परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा का बच्चा हूं.

जब आत्मा अपने स्वमान में स्थित होती है, तब दिव्याबुद्धि को युज कर परमधाम में अपने प्यारे पिता, शिवबाबा को याद करना है. जैसे ही आत्मा, अपने बाप को याद करती है, बाबा में बहुत कशिश होने के कारण, आत्मा अपने को परमधाम में प्यारे बाबा के सामने महसूस करती है. इसमें ही आत्मा बहुत डिप साइलेन्स का अनुभव करती है, जिसे ही डेड साइलेन्स कहते हैं. इस अवस्था में आत्मा, पुरानी दुनिया और पुराने शरीर सहित सबकुछ भूल जाती है और आत्मा सर्वोत्तम अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है.

जो आत्मा, इस पूरुषोत्तम संगमयुग पर, सर्वोत्तम अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, उसे भला मेले-मलाखड़े में जाने की दरकार कहा रह सकती है.

ॐ शांति.